



ISSN: 3049-2017

IJMH 2026; 3(5): 47-50

© 2026 IJMH

www.themultijournal.com

Received: 29-08-2026

Accepted: 21-09-2026

Publish : 22-09-2026

गुड्डी परवीन निसार अहमद खान

शोधार्थी, हिंदी विभाग,

डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस,

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

कामठी रोड, नागपुर,

डॉ. सुमेध नागदेवे

हिंदी विभाग प्रमुख,

डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस,

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

कामठी रोड, नागपुर,

उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य में आधुनिक नारी

गुड्डी परवीन निसार अहमद खान, डॉ. सुमेध नागदेवे

सारांश : आधुनिक साहित्य जगत की इन समस्त लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा एक ऐसी आधुनिक लेखिका रही है जिन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक बंधनों एवं परंपराओं के कारण आधुनिक नारी के भीतर में उत्पन्न होनेवाले मनोभावों का चित्रण किया है। इनके पचपन खंभे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेषयात्रा, अन्तर्वशी उपन्यासों में आधुनिक नारी के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। इनके उपन्यासों की नायिकाएँ शिक्षित होने के बावजूद भी पारिवारिक उत्तरदायित्वों एवं सामाजिक अपेक्षाओं के कारण अकेलापन अनुभूत करती हैं। बाहरी परिस्थितियों एवं भीतरी भावनाओं एवं इच्छाओं के मध्य उनके भीतर निरंतर अन्तर्द्वंद्व चलता रहता है। कभी वह प्रेम एवं विवाह जैसे बंधन को तुच्छ समझती है तो कभी उसी विवाह संबंध को बचाने की भरकस कोशिश भी करती है। उनके उपन्यासों की सुषमा, राधिका, अनु जैसी नायिकाएँ शिक्षित होने के कारण हर विपरीत परिस्थिति में अपने स्वतंत्र अस्तित्व की प्राप्ति हेतु संघर्ष करती हुई नजर आती हैं। स्वदेशी एवं विदेशी परिवेश में संघर्ष द्वारा वह अपने व्यक्तित्व को नया रूप देने में सफल होती दिखाई देती हैं। आधुनिक नारी स्वाभिमानी होने के कारण अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति सचेत एवं जागरूक है और वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनकर अपनी समस्याओं को स्वयं हल करना भी जानती है। यही आर्थिक मजबूती आधुनिक नारी के भीतर आत्मनिर्भरता का भाव निर्माण करने में सक्षम है। उषा के उपन्यासों की नारी भारतीय संस्कार एवं परंपराओं से बंधी होने पर भी परंपरा एवं आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करती है। इसके साथ ही उषा प्रियंवदा ने परिवार, समाज एवं राष्ट्र में आधुनिक नारी की स्थिति का चित्रण भी अत्यंत सहज और स्वाभाविक तरीके से किया है।

संकेत बिंदु :- अकेलापन, नारी द्वंद्व, संघर्ष, स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, आधुनिकता ।

प्रकृति परिवर्तनशील है। समय के साथ-साथ परिस्थितियाँ भी बदलती जाती हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति, समाज, सामाजिक नियम और आचार-विचार, रहन-सहन, भावनाएँ आदि भी समयानुसार परिवर्तनशील है। इन्हीं परिवर्तनशील विचारों, भावनाएँ एवं व्यवस्थाओं को स्वीकार करने की जो मानसिकता होती है, उसे ही हम आधुनिकता कहते हैं। साहित्य के क्षेत्र में भी इस बदलाव एवं संघर्ष को साहित्यकारों ने शब्दों के माध्यम से दर्शाया है। आधुनिक महिला साहित्यकारों में उषा प्रियंवदा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वह आरंभ से ही स्त्री जीवन को केंद्र में रखकर लिखती रही हैं। उन्होंने नारी के हर रूप का चित्रण बड़ी कुशलता एवं सटीकता से किया है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से बदलते समाज में आधुनिक स्त्री की इसी ठोस छवि एवं अस्मिता को ढूँढने का प्रयत्न किया है। उनका साहित्य न केवल आधुनिक नारी के जीवन के संघर्षों, जटिलताओं एवं समस्याओं को उजागर करता है बल्कि आधुनिक जीवन की उदासी, अकेलेपन, ऊब, घुटन आदि का अंकन भी यथार्थवादी धरातल पर करता है। साथ ही आधुनिक जीवन में नारी के आधुनिकता से परिपूर्ण विचारों के कारण उनके भीतर अपने अस्तित्व के प्रति जो चेतना जागृत हुई है, जिस कारण ही वह आज अन्याय या अत्याचार को सहन न करते हुए स्वतंत्र, शिक्षित एवं आत्मनिर्भर बनकर अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण भी कर रही है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक रचनाकारों में उषा प्रियंवदा एक ऐसी लेखिका हैं, जिसने नारी के विविध रूपों का चित्रण बड़ी सुक्ष्मता से अंकित किया है। आधुनिकीकरण के दौर में नारी को अपने जीवन में जिन समस्याओं एवं विसंगतियों का सामना करना पड़ता है, उसका चित्रण उषा ने अपने उपन्यास साहित्य में बड़ी कुशलता के साथ किया है।

Correspondence:

गुड्डी परवीन निसार अहमद खान

शोधार्थी, हिंदी विभाग,

डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस,

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

कामठी रोड, नागपुर,

आज के बदलते हुए आधुनिकीकरण के युग में अकेलेपन का बोध गहराने लगा है। हर व्यक्ति अपने परिवेश से कटता जा रहा है। आधुनिकता का बोध व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित बनाकर उन्हें भीतर से अकेला कर रहा है। इसी अकेलेपन की स्थिति को आधुनिक नारी भी झेल रही है। उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यास साहित्य में इसी अकेलेपन का शिकार नारी का चित्रण बड़ी सुक्ष्मता से किया है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास में सुषमा की जिंदगी इसी अकेलेपन में घुटती नजर आती है। परिवार के लिए ही वह नौकरी करती है, परंतु वह वहाँ भी अकेली रह जाती है। इसी अकेलेपन में वह छटपटाती रहती है। उसे लगता है- "जैसे वह शरशय्या पर लेटी है। बुरी तरह बिंधी हुई, दारुण यंत्रणा से छटपटाती हुई। उसके चारों तरफ का वातावरण उसके हृदय पर ऐसा भारी बोझ बनकर जम गया था जिसमें नील का स्पर्श, नील की आँखों की कोमलता धुंधली पड़ जाती थी। दुःख के इन क्षणों में वह नितांत अकेली थी और आँखों की सजलता में उसे नील का बड़ा हुआ हाथ भी न दिखाई देता था।"^१ यहाँ सुषमा के आस-पास का परिवेश भी उसके भीतर के दुःख एवं पीड़ा में वृद्धि करने के साथ उसकी नील संबंधी विगत स्मृतियों को ओझल करता हुआ जान पड़ता है और वह स्वयं को अकेली महसूस करती जाती है। इसी अकेलेपन का दोष वह माँ-बाप को देने के साथ ही कॉलेज के पचपन खंभे और दीवारों को ही अपनी डेस्टिनी समझकर अकेलेपन में ही अपना गुजारा करती है। इतना ही नहीं उसके जीवन का सारा उत्साह, उमंग सब समाप्त हो जाता है। 'रुकोंगी नहीं राधिका' उपन्यास में राधिका भी अकेलापन की पीड़ा से त्रस्त है। घर में पापा, भाई, भाभी आदि के होते हुए भी वह अकेलापन महसूस करती है। पिता द्वारा उसकी हमउम्र विद्या से दूसरा विवाह करने पर वह आहत होकर बड़े उम्र के डैन के साथ विदेश चली जाती है। वहाँ भी वह खुद को अकेला ही पाती है। इसी अकेलेपन से उभरने के लिए वह भारत आती है, परंतु वहाँ भी वह अकेला रहना ही पसंद करती है। ऐसी स्थिति में उसे तख्त पर अकेले पड़े रहने की आदत पड़ जाती है। 'शेषयात्रा' उपन्यास की अनु भी अकेलेपन से ऊब जाती है। पति विदेशी संस्कृति से प्रभावित होने के कारण अन्य स्त्रियों से अवैध संबंध रखता है जिस कारण वह इसी अकेलेपन में घुटती रहती है। पारिवारिक विघटन के बाद तो वह पागलखाने भेज दी जाती है और वहाँ भी अकेली रहती है। अपने अकेलेपन के संबंध में वह कहती है- "मेरे न माँ है, न बाप है, न भाई है, न बहन, न लड़का, न लड़की.....सारा संचित प्यार आप पर....."^२ अर्थात् यहाँ अनु किसी भी पारिवारिक सदस्य के अभाव में अपना सारा प्रेम अपने पति पर ही न्यौछावर कर देती है। अंतः अकेलेपन के कारण वह पति से याचना करती है, परंतु पति उसे तलाक देकर बिल्कुल असहाय और अकेला कर देता है। इसी अकेलेपन से ऊब कर वह प्रगतिवादी बन जाती है।

आधुनिक नारी के जीवन में निरंतर अन्तर्द्वंद्व चलते रहता है। उषा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास की सुषमा पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक मर्यादाओं के कारण भीतर ही भीतर

कुंठा एवं घुटन का शिकार होती है। वह हमेशा एक द्वंद्वात्मक मन स्थिति में रहती है। उसे लगता है कि अगर वह प्रेमी नील का साहचर्य स्वीकार करती है तो उसके परिवार की जिम्मेदारी को कौन उठायेगा। इसलिए वह जीवनभर अविवाहित रहने का प्रण लेती है और वह स्वयं को पचपन खंभों के भीतर कैद कर लेती है। राधिका आधुनिक विचारों से प्रभावित होने के बावजूद भी परंपरा और विदेशी परिवेश के बीच पिसती हुई नारी के गंभीर अंतर्द्वंद्व को उजागर करती है। जो पुरुषवादी सत्ता को स्वीकार नहीं करती इसलिए पिता के दूसरी शादी करने पर वह मन ही मन घुटन एवं अंतर्द्वंद्व में रहती है। वह विदेश पहुँचकर भी डैन के साथ संतुष्ट नहीं हो पाती और स्वदेश लौटने पर वह भारतीय समाज के संकीर्ण विचारों के साथ सामंजस्य नहीं बना पाती है। जिससे उसके मन में उब, घुटन और अलगाव निर्माण हो जाता है। इसी प्रकार 'शेषयात्रा' उपन्यास में भी अनु के माध्यम से आधुनिक नारी का अन्तर्द्वंद्व और उसकी मानसिक त्रासदी को दर्शाया है। पति के अकेला छोड़कर चले जाने पर उसके भीतर अजनबी देश में बिना किसी आर्थिक सहारे के खुद को संभालने का द्वंद्व चलते रहता है। भारतीय संस्कारों से बंधी होने के कारण अनु के भीतर अपने पति लौट आने की आकांक्षा सदैव बनी रहती है। वह प्रणव से कहती है- "तुम मुझे अपने साथ रख लो। मैं कुछ भी नहीं माँगूंगी सच मैं बिल्कुल दिक्कत दिए बिना रह लूँगी मोटर, बंगला, मुझे कुछ नहीं चाहिए जो आप देंगे वह सिर माथे पर। बस आप मुझे अपने साथ रख लो। मुझे अलग न करो। मैं पैरों पड़ती हूँ।"^३ इस प्रकार यहाँ अनु के पतिपरायण रूप को दर्शाया गया है जो किसी भी कीमत पर उससे अलग नहीं होना चाहती है। लेकिन उसके पति पर उसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता और वह उसे छोड़ देता है। पति के छोड़ने के बाद उसका अंतर्द्वंद्व और तीव्र हो जाता है प्रणव की पुरानी यादें और वर्तमान के यथार्थ के भीतर उसका मन झूलता रहता है।

आज की नारी अनेक प्रकार के संघर्षों से जूझती है। पारिवारिक, आर्थिक, मानसिक, तलाक, दहेज एवं नौकरीपेक्षा होने पर पद एवं प्रतिष्ठा का संघर्ष आदि। उषा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा आधुनिक नारी के आत्मसंघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। वह शिक्षित एवं कॉलेज के महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होने के बावजूद भी अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वाह के लिए निरंतर संघर्षशील रहती है। क्योंकि पिता के पक्षाघात से पीड़ित होने पर परिवार की बड़ी बेटी होने पर संपूर्ण परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उसके कंधे पर आ जाती है। इतना ही नहीं उसे

समाज के भय से और परिवार का एकमात्र सहारा होने के कारण उसे अपने प्रेमी नील का परित्याग करना पड़ता है। वह अपने प्रेमी नील से कहती है- “पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबु, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है।”⁴ अर्थात् सुषमा यहाँ अपने पारिवारिक संघर्षों एवं घुटन को नील के समक्ष व्यक्त करती है। ‘रुकोगी नहीं राधिका’ उपन्यास की राधिका स्वतंत्र व्यक्तित्व की युवती है, जो जीवन के हर स्तर पर स्वतंत्रता चाहती है। लेकिन उसे पहला विरोध अपने पिता द्वारा ही मिलता है, क्योंकि उसके पिता अपनी बेटी की हमउम्र विद्या से विवाह कर लेते हैं जिससे आहत होकर वह अपने से उम्र में बड़े विदेशी पत्रकार डैन के साथ विदेश चली जाती है। कुछ समय पश्चात् वह डैन से भी अलग होकर अक्षय के प्रति आकर्षित हो जाती है। फिर वह स्वदेश लौटकर आती है तो वहाँ भी उसे अपनी अस्तित्व की निरर्थकता का अनुभव होता है। इस कारण उसके भीतर निरंतर मानसिक संघर्ष चलता रहता है। ‘शेषयात्रा’ उपन्यास में अनु को उसका पति त्याग देता है। वह पहले तो कुंठाग्रस्त होती है मगर अपनी अदम्य जिजीविषा शक्ति के कारण संघर्षरत रहकर अपने अस्तित्व की स्थापना करने में सफल हो जाती है।

आधुनिक नारी स्वतंत्र और शिक्षित होने के साथ अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति जागरूक है। वह अपने निर्णय स्वयं लेना जानती है। शिक्षा ने स्त्री के भीतर इतना साहस और चेतना उत्पन्न कर दी है कि वह अपना एवं अपने परिवार का वहन स्वयं कर सकती है। उषा ने अपने उपन्यासों में नारी के इसी शिक्षित एवं आत्मनिर्भर रूप को बड़ी कुशलता से उभारा है। ‘पंचपन खंभे लाल दीवारें’ उपन्यास की सुषमा एक आधुनिक नारी है जो शिक्षित एवं स्वाभिमानी होने के साथ-साथ अपने परिवार के उत्तरदायित्व को भी सशक्तता से पूर्ण करती है। सुषमा अपने परिवार के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह एक बड़े लड़के की तरह करती है और अपने पिता द्वारा उसे शिक्षित एवं योग्य बनाने का बदला वह पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करके करती है। आज हमारे समाज में सुषमा जैसी कितनी आधुनिक नारी है जो अकेले अपने परिवार का पालन अपनी जिम्मेदारी समझकर करती है। वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र एवं शिक्षित है इसीलिए वह पारिवारिक कर्तव्यों को भलीभाँति पूर्ण करने में समर्थ है। ‘शेषयात्रा’ उपन्यास की नायिका अनु पति के दगाबाजी से आहत होकर आत्मनिर्भर बनकर नये सिरे से जिंदगी जीती नजर आती है। वह पति से तलाक मिलने पर टूटती नहीं है बल्कि स्वावलंबी बनकर अपने को आबाद करती है। इस संबंध में अनु कहती है-“मैंने अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व का लक्ष्य पा लिया है। अब आगे जो भी भाग्य दे, पूरे एहसास और जिम्मेदारी से स्वीकार करूँगी। अगर कुछ भी न मिले तो भी कोई शिकायत नहीं होगी। उसके पास अपनी डॉक्टरी की उपाधि तो है, सुख चैन से तो रह सकेगी, काम करने का

संतोष तो मिलेगा।”⁵ इस प्रकार से अनु ने कुछ अर्थों में अतीत से मुक्ति पाकर आधुनिक मूल्यों के आधार पर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित करने में सक्षम हो पाई। अब उसे किस्मत से भी कोई शिकायत नहीं है, क्योंकि उसने शिक्षा के आधार पर आत्मनिर्भर बनकर अपने जीवन में आनेवाली हर चुनौती का सामना करने के लिए खुद के व्यक्तित्व का निर्माण कर लिया है। अंतः दीपांकर से विवाह कर अनु आधुनिक नारी की स्वच्छंद मानसिकता का परिचय देती है। ‘अन्तर्वशी’ उपन्यास की सारिका शिक्षित, स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी युवती है। वह वाना को प्रेरित करती है। सारिका और क्रिस्तीन की स्वतंत्रता और स्वावलंबी प्रवृत्ति देखकर वाना को लगता है कि वह पानी के दलदल में फँसी केवल मेंढकी मात्र रह गयी है। इसीलिए वह भी अंग्रेजी सीखने, नौकरी एवं व्यवसाय करने का उचित निर्णय लेकर स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती है। इसी उपन्यास की एक पात्र क्रिस्तीना जो आत्मविश्वासी एवं स्वच्छंद प्रवृत्ति की आधुनिक नारी है। अपने पति को छोड़ने का उसे जरा भी पछतावा नहीं है। यौन सुख की प्राप्ति के लिए वह पुरुष से ज्यादा स्त्रियों को चाहती है। इसलिए वह वाना से कहती है- “पगली जब तू अपने अंदर से उठती एक अदम्य पुकार सुनेंगी न, तब पंख फैलाकर आकाश में उड़ने की शक्ति तुझमें स्वयं आ जाएगी।”⁶ अर्थात् वह वाना को अपने भीतर के आत्मविश्वास को जागृत करने का तथा अपनी क्षमता एवं अस्तित्व को पहचानकर अपने स्वप्नों को पूरा करने का अदम्य साहस और शक्ति स्वतः उत्पन्न हो जाती है।

अनादिकाल से ही परंपरा एवं आधुनिकता के बीच संघर्ष चलता रहा है। परंपरा पुरानी मान्यता को मानने के लिए बाध्य करती है और आधुनिकता परंपरा को न मानने के नए-नए तरीके सिखाती है। उषा प्रियंवदा का उपन्यास साहित्य इसी परंपरा और आधुनिकता का मिला-जुला रूप है। ‘पंचपन खंभे लाल दीवारें’ की नायिका सुषमा एक परंपरावादी युवती है। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह नौकरी कर परंपरा के अनुसार घर की बड़ी बेटी होने के दायित्व का निर्वाह करती है, परंतु शहरी परिवेश की आधुनिकता उसे नील से मित्रता करने से रोक नहीं पाई, परंतु यही परंपरा उसके नील से शादी करने में बाधा बनती है। वह परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष में खुद को भूल जाती है और नील से दूर होने का निर्णय लेती है। “रुकोगी नहीं राधिका” उपन्यास की राधिका भी परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष को झेलती नजर आती है। राधिका के पिता चाहते हैं कि वह भारतीय स्त्रियों की तरह घर में रहे, विदेश न जाये, परंतु राधिका आधुनिक विचारों वाले डैन से प्रभावित होकर विदेश चली जाती है। ‘शेषयात्रा’ की अनु परंपरावादी परिवार में पली थी। भारतीय परिवार के संस्कारों के प्रभाव के कारण ही विदेश में रहते हुए वह अपने पति प्रणव को ही सब कुछ समझती है। जब वह घर पर अकेली रहती है और वॉटरमैन के प्रेम निवेदन को वह ठुकरा देती है-“आपने गलत समझा है, डॉक्टर वॉटरमैन....मैं अपने पति के साथ बहुत सुखी हूँ। किसी दूसरे पुरुष को ध्यान भी मैं पाप समझती हूँ।”⁷ उसका ऐसा कहना यह दर्शाता है कि वह अपने परंपरागत संस्कारों से बंधी है। पति ही उसके लिए सब कुछ है, परंतु उद्धार में अनु का रूप बदल जाता है।

पूर्वाधुनिकता की समस्याओं ने उसके जीवन में आधुनिकता को ला दिया है। अब वह सीधी सादी अनु नहीं रही है। काफी प्रयत्नों के बाद अब वह भारतीय परिव्रता पत्नी से डॉक्टर बन आत्मनिर्भर होकर अपने निर्णय स्वयं लेनेवाली आधुनिक, सशक्त नारी बन चुकी है। इस परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष में विजय आधुनिकता की होती है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य का समग्र अध्ययन करने पर निष्कर्षतः यह पता चलता है कि उनके उपन्यास साहित्य में नारी का आधुनिक रूप उभर कर आया है। उषा प्रियंवदा आधुनिक महिला लेखिकाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उनके साहित्य पर विदेशी संस्कृति का प्रभाव होने के कारण उनकी नायिकाओं में आधुनिकता के दर्शन सहज ही हो जाते हैं। उनकी आधुनिक नायिकाएँ अपने अस्तित्व के लिए लड़ती दिखाई देती हैं। उनके उपन्यास साहित्य में आधुनिक नारी जीवन के अकेलेपन, संक्रास, स्वतंत्रता, सजगता, आधुनिक जीवन की ऊब, घुटन, भारतीय परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष आदि का चित्रण किया है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की सुषमा परंपरावादी परिवार से होते हुए भी उसके विचारों में आधुनिकीकरण एवं महिला सशक्तिकरण की झलक दिखाई देती है। सुषमा जैसी नारियाँ शिक्षित एवं स्वाभिमानि होने के कारण अपने परिवार का उदर निर्वाह स्वयं करती दिखाई देती हैं। जिस वजह से उसे अकेलापन, घुटन आदि का सामना करना पड़ता है। इस बीच उसे अपने परिवार के लिए अपने प्रेमी नील का परित्याग भी करना पड़ता है। 'रुकी नहीं राधिका' उपन्यास की राधिका भी मनचाहा जीवनसाथी पाने की लालसा में अन्य पुरुषों के संपर्क में आती है। लेकिन वह आधुनिक होकर भी मर्यादाओं में बँधी मालूम होती है। 'शेषयात्रा' की अनु, 'अन्तर्वशी' की वाना जैसी नायिकाएँ परंपरा और आधुनिकता के बीच जूझती, निर्णय लेती और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती दिखाई देती हैं। उषा प्रियंवदा ने आधुनिक नारी को केवल 'अबला' के रूप में नहीं, बल्कि जटिल निर्णय लेने वाली और संघर्षशील 'सबला' के रूप में प्रस्तुत किया है जो अपने अस्तित्व की खोज में लगी रहती है। यह सब उसके आधुनिक जीवन एवं आधुनिक विचारों का ही परिणाम है कि वह आज अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत होकर उनके लिए निरंतर प्रयासरत है। अंतः उषा प्रियंवदा के उपन्यास साहित्य में आधुनिक नारी जीवन में उसके यथार्थ, अस्मिता की पहचान, संघर्ष, गरिमा, आत्मविश्वास, अंतर्द्वंद्व, स्वाभिमान आदि का सशक्त दस्तावेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- १) प्रियंवदा, उषा : पचपन खंभे लाल दीवारें, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, २०१३, पृ. १२५
- २) प्रियंवदा, उषा : शेषयात्रा, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, २०२२, पृ. ४८
- ३) भोसले, नीता : उषा प्रियंवदा कृत शेषयात्रा एक अनुशीलन, अलीगढ़ : वाङ्मय बुक्स, २०१४, पृ. ५८
- ४) प्रियंवदा, उषा : पचपन खंभे लाल दीवारें, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, २०१३, पृ. १३४
- ५) प्रियंवदा, उषा : शेषयात्रा, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, २०२२, पृ. १११

- ६) प्रियंवदा, उषा : अन्तर्वशी, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, २००४, पृ. १०८
- ७) प्रियंवदा, उषा : शेषयात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २०२२, पृ. २९